सेंट एंड्रयूज़ स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपड़गंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: २०२५-२०२६

कक्षा:पाँचवीं **विषय: हिंदी** **अपठित गद्यांश**

एक प्रसिद्ध कवि ने कविता लिखी है कि एक पंछी पिंजरे में बंद है और एक खुले गगन में उड़ता है। बंधक पंछी उस पिंजरे की सोने की सलाखों को ही अपना घर मानता है और खुश रहता है। वहीं खुले आसमान में घूमने वाला पंछी नीले गगन को अपना घर मानता है और खुश रहता है। यहाँ कवि ने यही बताया है कि हम जन्म से जैसे रहने लगते हैं, उसे ही सही मानने लगते हैं। जो देखते हैं, वही हमारे लिए सही होता है। लेकिन, जब हमें उससे अलग कुछ पता चलता है, तब तुलना का भाव मन में खुद ही आने लगता है।

प्र०१-गद्यांश में कैसे पंछियों के बारे में बताया गया है?

प्र०२-बंधक पंछी कहाँ और कैसे रहता है?

प्र०३-नीले गगन को अपना कौन मानता है?

प्र०४-गद्यांश में से 'गगन' का पर्यायवाची शब्द खोजकर लिखिए।